प्रश्नोरा नागरों का मन्दसोर आगमन –

वि.सं. 589 में (सन् 532 ई.) मन्दसोर के राजा यशोधर्मन ने एक यज्ञ कराया था जिसे सम्पन्न कराने के लिए जूनागढ़ से इन प्रश्नोरा नागरों को आमंत्रित किया जिन्होंने इस यज्ञ को सम्पन्न कराया व बाद में इनको यही बसा लिया। जहाँ ये 800 वर्ष रह कर राज्य कार्य में भी भाग लेते रहे।

मन्दसोर से पलायन –

जि. सें. 1362 (सन् 1305 ई.) मे अलाउद्दीन की सेना ने रक्षा बन्धन के दिन शिवना नदी पर तर्पण करते हुए इन निहत्थे ब्राह्मणों पर आक्रमण करके इनका कत्ले आम कर इस जाति का समूल नाश कर दिया। इनमें कुछ ब्राह्मणों व उनकी स्त्रियों को वहाँ के सेनापति हालू जी हाड़ा ने बचा लिया तथा कुछ बनारस पढ़ने गये थे वे बच गये। उनको वहाँ से बुलाकर इन मृतकों का पिंडदान कराया गया तथा ये बचे हुए परिवार शिवना नदी का जल न पीने तथा दुर्ग में निवास न करने की प्रतिज्ञा लेकर इस भूमि को प्रणाम कर यहाँ से मालवा व गुजरात की ओर पलायन कर गये।

मेवाड़ में आगमन :–

वि.सं. 1362 (सन् 1305 ई.) में ही सर्वप्रथम तीन परिवार ही मेवाड़ में महाराणा की शरण में आये थे जिनमें बसन्तराय, भट्ट घनेश्वराय तथा भट्ट विष्णु के पूर्वज थे। ये सभी उद्भट्ट विद्वान, दर्शन शास्त्रों के ज्ञाता, प्रसिद्व कवि तथा अच्छे शास्त्रज्ञ थे। इन परिवारों को आये आज वि.सं. 2062 (सन् 2005 ई.) में 700 वर्ष हुए हैं। इसके बाद समय समय पर इस जाति के अन्य परिवार भी आते रहे। इस प्रकार वि.सं. 1925 (सन् 1868 ई.) तक कुल 21 परिवार मेवाड़ में आकर निवास करने लगे। जिनमें 3 परिवारों के वंशज अब मेवाड़ में नहीं रहे। शेष 18 परिवारों के वंशज ही वर्तमान में यहाँ निवास कर रहे हैं जिनको आज (1–1–2006 ई.) कुल 384 परिवार है तथा इनकी जनसंख्या 2057 है जिनका विवरण आगे दिया जा रहा है। इनकी विद्वता से प्रभावित होकर यहाँ के महाराणाओं ने इनको जागीरें, जमीनें आदि देकर इनको सम्मानित भी किया था। सन् 1958 ई. तक ये इन जागीरों को भोगते रहे तथा बाद में भारत सरकार ने इनका पुनर्ग्रहण कर लिया।

दशोरा नामकरण–

मन्दसोर में रहने तक इस जाति को "प्रश्नोरा नागर" नाम से ही जाना जाता था किन्तु मेवाड़ में आगमन के बाद इनको "दशपुरीय ब्राह्मण" "दशपुर ज्ञाति" अथवा "दशोरा ब्राह्मण" कहा जाने लगा। मन्दसोर से पलायन कर अन्य भी कई जातियाँ मेवाड़ में आई। वे भी मन्दसोर से विस्थापित होने के कारण अपने को 'दशोरा' ही लिखती है जिनमें दशोरा तेली, दशोरा साहू, दशोरा तम्बोली, दशोरा सालवी, दशोरा खटीक, दशोरा बलाई, दशोरा हरिजन आदि हैं।

मध्य प्रदेश में दशोरा महाजनों का एक बड़ा वर्ग है जो अपने को 'दशोरा नागर' कहता है। इनके भी सभी गोत्र व अवटंक दशोरा ब्राह्मणों के ही समान है किन्तु ये अपना उपनाम गुप्ता, मोदी, सुगन्धी आदि लिखते रहे है। ये भी भगवान हाटकेश्वर के उपासक है जो इस नागर जाति के इष्ट देव है। किन्तु इनका दशोरा ब्राह्मणों से कन्या लेन देन व भोजन व्यवहार नहीं है जिससे यह एक भिन्न जाति बन गई है।